शोधभूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 294-299

श्री देवनारायण भगवान की फड

राखी सिंह राठौड़
शोध छात्र, विजुअल विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
ई–मेलः rakhisinghrathore18@gmail.com
डॉ. मनोज टेलर
एसोसिएट प्रोफसर, विजुअल विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सारांश

श्री देवनारायण की फड़ राजस्थान के लोक जीवन की एक अत्यंत प्राचीन और समृद्ध मौखिक व दृश्य कला परम्परा है, भगवान देवनारायण (विष्णु के अवतार) के जीवन, पराक्रम, सघर्ष और चमत्कारों की चित्रित किया जाता है। देवनारायण की फड़ राजस्थानी में देवनारायण की फड़फड़ा कहते हैं। ये कपड़े पर बने चित्र हैं जिनमें देवनारायण की कथा को दर्शाया गया है। इसे कपड़े पर विभिन्न रंगों (विशेषकर लाल, पीले और हरे) से उकेरा जाता है, यह राजस्थान की सबसे लंबी और लोकप्रिय फड़ मानी जाती है।

राजस्थान में देवी–देवताओं की गाथाओं का कपड़े पर बने चित्रों के माध्यम से पट–चित्रण किया जाता है। जिसे राजस्थानी भाषा में फड़ कहा जाता है। यह लोक नाट्य, गायन, वादन, मौखिक साहित्य, चित्रकला व लोकधर्म का एक अनूठा संगम है।

मुख्य शब्द– देवनारायण, राजस्थानी, फड़, चमत्कार।

प्रस्तावना–

राजस्थान के लोक जीवन में भोपेाओं द्वारा फड़ बांचने की परम्परा का सदियों से प्रचलन रहा है। विशेषतः देवनारायण और पाबू जी के फड़ अत्यन्त लोकप्रिय है। कपड़े या कैनवास पर देवताओं की जीवनी का चित्रण फड़ कला कहलाता है। लगभग 36 मीटर विशाल फड़ का प्रयोग किया जाता है जिसमें लोक गाथा के पात्रों और घटनाओं का चित्रण होता है। इस विशालकाय चित्रण को सामने रख भोपागण काव्य के रूप में लोक कथा के पात्रो के जीवन, उनकी समस्याओं प्रेम, क्रोध, संघर्ष, बलिदान, पराक्रम और उस जमाने में प्रचलित अन्तद्वैनदो को उभारकर प्रस्तुत करते है। नृत्य और गान का समावेश भोपाओं की इस प्रस्तुति को अत्यन्त लोकप्रिय बना देता है। विशेषकर राजस्थान के

देहाती क्षेत्र के लोगों के सांस्कृतिक जीवन में इस परम्परा की गहरी छाप रही है। फड़ का प्रमुख रंग लाल होता है।

भगवान देवनारायण को विष्णु का अवतार माना जाता है। देवनारायण के फड़ में जहाँ एक ओर देवनारायण के पूर्वजों के जीवन, पराक्रम, प्रेम व बलिदान को चित्रित किया जाता है वहीं दूसरी ओर भगवान विष्णु के देवनारायण के रूप में जन्म लेने के कारण और अवतार लेने के पश्चात् उनकी जीवन लीलाओं को दर्शाया जाता है।

भोपागण जागरण के रूप में नृत्य और गान के साथ फड़ को बाँचते है। यह प्रस्तुति प्रत्येक वर्ष देवनारायण के लक्खी मेले में की जाती है। चौमासे (बरसात का महीना) में इस प्रस्तुति को रोका जाता है। कहा जाता है कि चौमासे में देवनारायण एवं अन्य देवतागण सो जाते है इस महीने में फड़ों को खोलना भी वर्जित होता है। चौमासे में बैठकर कथा वाचन एवं गान किया जा सकता है परन्तु उसमें फड़ व नृत्य का प्रयोग नहीं किया जाता है।

फड़ के फटने पर या जीर्ण–क्षीर्ण होने पर पुष्कर झील में प्रवाहित करना फड़ को ठंडी करना कहलाता है।

प्रमुख फड़े–

देवनारायण जी की फड़– इनका वाचन गुर्जर जाति के लोग करते है। यह सर्वाधिक प्राचीन सर्वाधिक चित्र वाली और सर्वाधिक लम्बी फड़ है। 1992 में इसका डाक टिकट जारी किया गया। सबसे छोटी फड़ भी है इसका वाद्य यंत्र जंतर है।

पाबूजी की फड़– इस फड़ का वाचन नायक रेबारी जाति के भोपों के द्वारा किया जाता है। इसका प्रमुख वाद्य यंत्र रावणहत्था है। पाबूजी की फड़ सर्वाधिक लोकप्रिय फड़ है। पाबूजी के पवाड़े माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।

रामदेव जी की फड़– इसका वाचन कामड जाति के लोगों द्वारा रावणहत्था के साथ किया जाता है।

रामदल–कृष्णदल की फड़– इस फड़ का वाचन दिन में किया जाता है। इस फड़ के वाचन में वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं होता है। इस फड़ में कृष्ण और राम की जीवनी तथा आम जनजीवन का चित्रण है।

भैंसासुन की फड़– इस फड़ का वाचन नहीं किया जाता है केवल बावरी या बागर जाति के लोगों द्वारा चोरी करने से पहले पूजा जाता है।

देवनारायण जी की फड़ का वाचन गुर्जर जाति के भोपों के द्वारा किया जाता है। फड़ वाचन करते समय जंतर वाद्य यंत्र काम में लिया जाता है जो एक तत् वाद्य यंत्र है। देवनारायण जी की फड़ में 335 गीत है जिनका लगभग 1200 पृष्ठ में संग्रह किया गया है एवं लगभग 15000 पंक्तियाँ है। ये गीत परम्परागत भोपाओं को कठंस्थ याद रहते है।

देवनारायण जी की फड़ राजस्थान के सभी लोक देवताओं की सबसे पुरानी फड़ को राजस्थान की महाभारत भी कहा जाता है। इस फड़ को रात्रि के तीन पहर गाया जाये तब यह फड़ 6 महीने में पूरी होती है। देवनारायण जी की फड़ में इनके पिता जी सहित 24 बगड़ावत भाईयों की वीरता का वर्णन किया गया है।

देवनारायण जी की फड़ राजस्थान की सबसे लम्बी लोक गाथा एवं सबसे अधिक चित्रांकन वाली फड़ है। यह फड़ राज्य की सबसे प्राचीन चित्रकला है।

देवनारायण एवं पाबूजी आदि जीवन पर आधारित एवं उनकी शौर्य गाथाओं पर बनाए जाने वाले पारम्परिक अनुष्ठानिक कुडलित चित्र पड़/फड़ चित्र कहलाते है। फड़ केवल एक चित्र भर नहीं माना जाता है यह अपने आप में देवता स्वरूप है। इसलिए इसे बनाने वाले चित्रकार और बाँचने वाले भोपा, दोनों ही इसे पवित्र मानते हैं। भोपा पूरी फड़ को साक्षात् दवेता मानते है वे इसे प्रतिदिन धूप अगरबत्ती लगाते है और इसे पवित्र स्थान पर रखा जाता है। वे एक बार इसे खोलने के बाद बिना बाँचे बन्द नहीं करते। फड़ के पुराने हो जाने पर उसे इधर–उधर नहीं फेंका जाता बल्कि पुष्कर ले जाकर पवित्र सरोवर में विसर्जित किया जाता है।

फड़ चित्रकारों का मानना है कि फड़ चित्रों का इतिहास लगभग 600 वर्ष पुराना है। वे मानते है कि फड़ चित्रण के लिए मेवाड़ शैली के अंतर्गत एक विशिष्ट चित्रण शैली का विकास किया जिसे फड़ चित्र शैली के रूप में भी जाना जाता है।

फड़ एक अपभ्रंश है जिसका प्रादुर्भाव पढ शब्द से हुआ जिसका तात्पर्य है पढ़ना जब भोपा लोक गायक स्थानीय, शौर्य गाथाओं पर आधारित इन चित्रों को प्रस्तुत करते है तब ऐसा लगता है कि वे इन चित्रों के माध्यम से उन शौर्य गाथाओं को पढ़ रहे हैं परन्तु फड़ शब्द अधिक मान्य और आम प्रचलन में है। स्वयं भोपा भी इन चित्रों को फड़ ही कहते है। फड़ चित्रों को पटचित्रों से भी जोड़कर देखते है क्योंकि यह दोनों ही कपड़े की सतह पर चित्रित किये जाते है। इनका स्वरूप विवरणात्मक होता है परन्तु पट, सूती कपड़े की दो सतहों को आपस में चिपकाकर बनाया जाता है जबकि फड़ कपड़े की एक सतह से बनाई जाती है। पटचित्र ओडिशा की जगन्नाथ उपासना से सम्बद्व होते है और फड़ चित्र राजस्थान के लोग देवताओं की शौर्य गाथाओं पर आधारित है।

फड़ चित्र किस प्रकार बनना आरम्भ हुए इस संबंध में अनेक मत प्रचलित है। कुछ फड़ चित्रकार मानते है कि प्राचीनकाल में भोपा गायक राजस्थान में प्रचलित लोक देवताओं की गाथाएं गा–गाकर सुनाया करते थे उन्हें लगा कि यदि इन कथाओं पर आधारित चित्र बनवाकर गायन के साथ प्रस्तुत किये जाएं तो प्रस्तुति अधिक प्रभावशाली बन पड़ेगी। अतः उन्होंने फड़ चित्रकारों के पूर्वजों से इन लोक कथाओं पर आधारित चित्र बनाने का आग्रह किया और इस प्रकार फड़ चित्र बनना आरम्भ हुए।

आजकल तो रेडीमेड रंगों एवं ब्रशों का प्रयोग भी होने लगा है परन्तु फड़ चित्रकार, परम्परागत रंग स्वयं ही अपने लिए तैयार करते थे। फड़ चित्रों में सात रंगों का प्रयोग किया जाता है। यह रंग प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त किये जाते है जैसे नारंगी एवं पेवड़ी या सिन्दरू से पीला रंग हरताल से हरा रंग जंगल से, भूरा रगं गेरू या हिरमिच से, लाल रगं हिंगलू से, नीला रंग नील से और काला रंग काजल से बनाया जाता है। रंगों को पक्का करने के लिए उसमें खेजड़ी वृक्ष का गोंद मिलाया जाता है।

फड प्रस्तुति के अंग –

फड़ प्रस्तुति के दो प्रमुख अंग है–कथा वाचन और कथा गायन–नर्तन। यद्यपि मूल कथानक एक ही होता पर प्रत्येक भोपा उसे अपने ढंग से ओर निज कंठ के सुरीलेपन से विशिष्ट बना देता है। फड़ गायन में मुख्यतः कहरवा द्रुतलाय, कहरवा अति विलम्बित लय, कहरवा–ताल मध्य लय, कहरवा मध्य लय का प्रयोग किया जाता है।

सामान्यतः फड़ राजस्थानी बोली में ही बाँची जाती है परन्तु इस पर आंचलिकता का भी प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष– अध्ययन से यह पता चलता है कि फड राजस्थान की संस्कृति इतिहास की अमूल्य धरोहर है। यह इतिहास का अमूल्य अंग है। देवनारायण फड़ चित्रांकित पर्दे के सहारे प्रदर्शनात्मक विधि द्वारा गाया जाता है एवं नाटक द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

चित्र सख्या 1:– भगवान देवनारायण की फड़

चित्र संख्या 2:–भगवान देवनारायण जी की फड़

चित्र संख्या 3 व 4 :– फड़ वाचन करते हुऐ भोपे व पुजारी

संदर्भ सूची–

1. सायर, देवीलाल वर्मा रामगींडा, 2018, राजस्थानी लोकनृत्य, भारतीय लोककला मण्डल पंचशील, उदयपुर राजस्थान 313001 एः पृ.सं. 5 से 9
2. डॉ, कल्ला नंदलाल, 2000, राजस्थानी लोक साहित्य एवं संस्कृति सुदर्शन कम्प्यूटर सिस्टम जोधपुर (पृ.सं. 115 से 126)।

3. आहूजा आर.डी., 2002 राजस्थान लोक संस्कृति और साहित्य कुंज, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया फेज–11 बंसतकुज, नई दिल्ली–110070 द्वारा प्रकाशित (पृ.सं. 105 से 115)
4. अग्रवाल, गोविन्द, 2013 राजस्थानी लोकगीत, लोक संस्कृति, शोध संस्थान नगर श्री चूरू, ट्रस्ट, चूरू राजस्थान (पृ.सं. 1 से 175)
5. रानी लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत बगड़ावत देवनारायण महागाथा, पंचषील प्रकाशन, जयपुर 1993 (पृ.सं. 614 से 615)
6. पं. बंशीधर शर्मा, बगड़ावत गाथा, जोशी पुस्तक भवन किशनगढ़, (पृ.सं. 1 से 69)
7. वर्मा गींडाराम सायर, देवीलाल 2018 राजस्थान के भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर (पृ.सं. 70 से 72)